वाणिज्य शिक्षण में परीक्षण

शैक्षणिक प्राप्य उद्देश्य सम्बन्धित व्यवहार परिवर्तन तथा पाठ्य-पुस्तक के ज्ञात हो जाने के बाद मूल्यांकन विधियों का स्वरूप निश्चित किया जाता है। परीक्षण के कुछ तरीके स्वतन्त्र क्रियात्मक तथा कुछ तरीके क्रियात्मक होते हैं। परीक्षण के विभिन्न प्रकारों का स्पष्ट रूप निम्नलिखित तालिका में प्रदर्शित किया गया है—

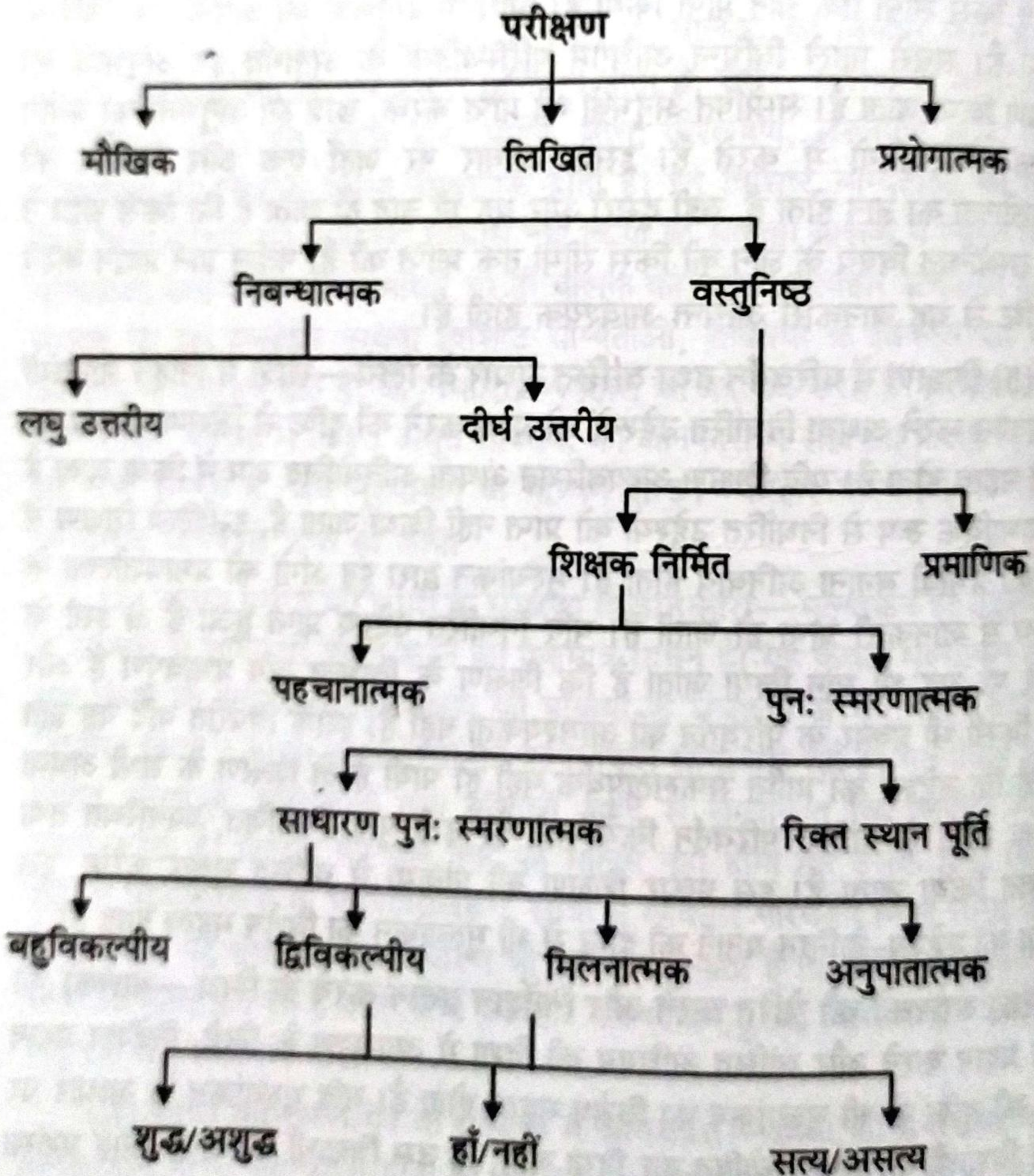

Scanned by TapScanner

निबन्धात्मक परीक्षण
[ESSAY TYPE TESTS]

निबन्धात्मक परीक्षण वे परीक्षायें होती हैं, जिनमें छात्रों को कुछेक पूछे गये प्रश्नों के उत्तर अपनी स्वयं की भाषा का प्रयोग करते हुए विस्तार से देने होते हैं। छात्रों को पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखित रूप में एक निबन्ध के रूप में देने होते हैं, इसीलिये इन्हें निबन्धात्मक कहा जाता है। उत्तर की सीमा क्या हो, यह प्रश्न के स्वरूप, छात्र की योग्यता तथा उपलब्ध कराये गये समय पर निर्भर करती है।

वाणिज्य विषय के अध्यापक तथा परीक्षकों द्वारा लम्बे समय से निबन्धात्मक प्रश्नों का छात्रों के वाणिज्य विषय से सम्बन्धित ज्ञान का माप सफलतापूर्वक किया जा रहा है। इस व्यवस्था के अन्तर्गत छात्र को वाणिज्य से सम्बन्धित कुछ प्रश्न दे दिये जाते हैं तथा छात्र उनका उत्तर अपनी योग्यता व समर्थ के अनुसार विस्तार से एक निबन्ध के रूप में देता है, जिनकी जाँच करके परीक्षक या अध्यापक छात्रों की वाणिज्य विषय से सम्बन्धित उपलब्धि का अंकन या मापन करता है।

निबन्धात्मक परीक्षण के गुण
(Merits of Essay Type Tests)

(1) निर्माण की दृष्टि से सुगमता—निबन्धात्मक परीक्षणों के प्रश्न-पत्रों का निर्माण अत्यन्त सरल होता है, क्योंकि प्रश्न छोटे होते हैं, इन्हें कम समय में तैयार किया जा सकता है। इन प्रश्न-पत्रों के निर्माण में किसी पूर्व प्रशिक्षण या विशेष कौशल की आवश्यकता नहीं होती तथा प्रत्येक शिक्षक जिसे अपने विषय से सम्बन्धित पाठ्य-वस्तु का संतोषजनक स्तर तक का ज्ञान है, इन प्रश्न-पत्रों का निर्माण कर सकता है।

(2) विस्तृत पाठ्यक्रम पर आधारित—निबन्धात्मक परीक्षणों में समस्त पाठ्यक्रम पर आधारित प्रश्न पूछे जा सकते हैं तथा सभी अध्यायों के सम्बन्ध में विद्यार्थियों के ज्ञान तथा विकसित मानसिक योग्यता के सम्बन्ध में निर्णय लिया जा सकता है। इस प्रकार से निबन्धात्मक परीक्षण विस्तृत पाठ्यक्रम के मूल्यांकन में सहायक होता है।

(3) विशिष्ट मानसिक योग्यता की जाँच—निबन्धात्मक परीक्षणों में विद्यार्थियों को अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता होती है। इसलिये इनके द्वारा विशिष्ट मानसिक योग्यताओं जैसे तर्क, अभिव्यंजना, आलोचनात्मक चिन्तन आदि का मापन सम्भव है।

(4) लेखन शक्ति के विकास की जाँच में सहायक—निबन्धात्मक परीक्षणों द्वारा विद्यार्थियों की लेखन शक्ति का विकास तथा विकास के साथ-साथ लेखन शक्ति के विकास की जाँच में भी सहायता मिलती है, जिसके फलस्वरूप विचारों के प्रस्तुतिकरण में लेख स्पष्टता, प्रभाव, महत्ता व शुद्धता आदि का ज्ञान होता है।

(5) भावों का संगठन—इन परीक्षणों में तथ्यों तथा सूचनाओं को दिशा प्रदान करने की क्षमता तथा उन्हें उचित प्रकार से संगठित करने का अवसर प्रदान होता है।

Scanned by TapScanner

(6) समय, श्रम तथा समय की बचत—इन परीक्षणों से सम्बन्धित प्रश्न-पत्रों का निर्माण कम समय में ही किया जा सकता है तथा इन प्रश्न-पत्रों द्वारा वृहत् पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में एक साथ अनेक विद्यार्थियों की जाँच की जा सकती है। इसके अतिरिक्त इनके मुद्रण तथा मूल्यांकन में भी कम धन खर्च करना पड़ता है।

(7) मौलिकता का परीक्षण—इन परीक्षणों में विद्यार्थियों को अपने विचारों को मौलिक रूप देने का पर्याप्त अवसर मिलता है।

निबन्धात्मक परीक्षण के दोष

(DEMERITS OF ESSAY TYPE TESTS)

(1) शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य में बाधक—निबन्धात्मक परीक्षणों में विद्यार्थी पूरे वर्ष अध्ययन न करके केवल परीक्षा से कुछ दिन पहले ही अध्ययन करते हैं। इस अवधि में अधिक से अधिक तैयारी करने के कारण ये अपनी दिनचर्या के प्रति अनियमित हो जाते हैं। इस अनियमितता का प्रभाव उनके स्वास्थ्य पर पड़ता है। इस अनियमितता का कुप्रभाव उनके स्वास्थ्य पर पड़ने के साथ-साथ उनकी मानसिक स्थिति भी अशान्तमय हो जाती है, क्योंकि उन्हें कम समय में अधिक से अधिक तैयारी, परीक्षा की बढ़ती हुई निकटता का भय बना रहता है।

(2) उत्तर के सम्बन्ध में अनिश्चितता—इन परीक्षणों से उत्तर लिखते समय परीक्षार्थी किसी निश्चित मापदण्ड को ध्यान में नहीं रखते हैं। प्रत्येक परीक्षार्थी अपने तरीके से प्रश्नों का उत्तर प्रस्तुत करता है। इन परीक्षणों में परीक्षार्थियों को केवल भाषा-शैली के आधार पर ही परीक्षकों को धोखा देने का अवसर प्राप्त होता है। परीक्षकों के पास भी कोई ऐसा मापदण्ड नहीं होता है, जिसके आधार पर वे यह निश्चित कर सकें कि उत्तर के प्रस्तुतिकरण में भाषा-शैली, तर्क-शक्ति तथा तथ्यों के प्रस्तुतिकरण आदि को किस सीमा तक ध्यान में रखा जाता है।

(3) पाठ्यक्रम का अपर्याप्त प्रतिनिधित्व—इन परीक्षणों से प्रश्न-पत्रों में पाठ्यक्रम का पूर्ण प्रतिनिधित्व नहीं हो पाता है। इनमें पाठ्यक्रम के मुख्य-मुख्य स्थानों पर मात्र पाँच प्रश्नों से लेकर दस प्रश्नों का उत्तर लिखना होता है। इन परीक्षणों में प्रश्न-पत्रों में लगभग पचास प्रतिशत पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाते हैं। इस अपर्याप्त नमूनाकरण से विद्यार्थी के विकास का उचित मूल्यांकन नहीं हो पाता है। विद्यार्थी महत्वपूर्ण प्रश्नों का अनुमान लगाकर पढ़ते हैं तथा परीक्षा में सफल हो जाते हैं।

(4) वास्तविक ज्ञान के मूल्य का अभाव—इन परीक्षणों के द्वारा विद्यार्थी के वास्तविक ज्ञान की जाँच भली-भाँति नहीं हो पाती है। अवसर की प्रधानता के कारण कम ज्ञान प्राप्त करने वाला विद्यार्थी कभी-कभी अपने से अग्रणी विद्यार्थी से आगे बढ़ जाता है, जबकि अधिकांश पाठ्य-वस्तु का अध्ययन करने वाला विद्यार्थी केवल कुछ अपठित प्रश्नों के पूछे जाने पर संतोषजनक अंक भी प्राप्त नहीं कर पाता है।

Scanned by TapScanner

(5) प्रयोग करने की अविकसित क्षमता—इन परीक्षणों में विद्यार्थी अपने ज्ञान का विभिन्न मानसिक शक्तियों के विकास के अभाव में प्रयोग नहीं कर पाते हैं। इसी कारण विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक तथा संश्लेषणात्मक प्रश्नों के पूछे जाने पर विद्यार्थी उनका सही उत्तर नहीं दे पाते हैं।

सुधार हेतु सुझाव

(Suggestions for Improvement)

उपरोक्त दोषों के होते हुए भी निबन्धात्मक परीक्षायें आज भी उपयोगी हैं। इनकी उपयोगिता को बढ़ाने तथा इनमें व्याप्त दोषों को दूर करने की आवश्यकता है। इन परीक्षाओं में आवश्यक सुधार करने हेतु नीचे लिखे सुझाव दिये जा सकते हैं—

(1) निबन्धात्मक परीक्षाओं का फैलाव बढ़ाया जाये। इसके लिये परीक्षाओं में अधिक प्रश्न पूछे जायें तथा छात्रों से अपेक्षा की जाये कि वे संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित उत्तर दें। छात्र वर्तमान में 5-6 प्रश्नों के उत्तर देते हैं। इनकी संख्या बढ़ा दी जाये तथा उत्तर की लम्बाई को सीमित कर दिया जाये।

(2) इन परीक्षाओं से वैषयिकता (Subjectivity) कम करने के उपाय किये जायें। इस हेतु परीक्षकों को उत्तरों की जाँच की विस्तृत योजना दे दी जाये और परीक्षक अंकन-योजना का कड़ाई से पालन करें।

(3) प्रश्न-पत्र में जितने भी प्रश्न हों, छात्रों से अपेक्षा की जाये कि वह उन सभी प्रश्नों का उत्तर दें। प्रश्नों में न तो विकल्प हो और न प्रश्न चयन करने की स्वतन्त्रता। प्रत्येक छात्र को प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देना हो, ऐसी व्यवस्था की जाये।

(4) प्रश्न-पत्रों का निर्माण सावधानी के साथ किया जाये। प्रश्न-पत्रों में केवल ज्ञानात्मक प्रकार के ही प्रश्न न हों, अपितु अन्य उद्देश्यों से सम्बन्धित प्रश्नों को भी उपयुक्त मात्रा में भार (Weightage) प्रदान किया जाये।

(5) प्रश्नों की भाषा सरल, सीधी तथा बोधगम्य हो, जिससे छात्र यह आसानी से समझ सकें कि प्रश्न क्या उत्तर चाहता है।

(6) प्रश्नों के स्वरूप को बदला जाये, जिससे मूल्यांकन में वस्तुनिष्ठता लाई जा सके।

(7) लम्बे उत्तर लिखने के बजाय छोटे उत्तरों को महत्व दिया जाये, साथ ही रेखाचित्र, मानचित्र, डायग्राम आदि बनवाने से सम्बन्धित प्रश्नों को भी उपयुक्त स्थान व महत्व दिया जाये।

Scanned by TapScanner